

महिला आंदोलनों का इतिहास और उनका वर्तमान प्रभाव

डॉ० रजत गंगवार

असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास,

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीसलपुर, पीलीभीत, उ०प्र०

rajatgangwar4289@gmail.com

शोध सारांश

19वीं सदी का भारत सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का युग था। 18वीं सदी के अंत और 19वीं सदी के प्रारंभ में भारतीय समाज अनेक सामाजिक कुरीतियों से ग्रस्त था। महिलाओं की स्थिति विशेष रूप से चिंताजनक थी। सती प्रथा, बाल विवाह, विधवाओं का दुर्व्यवहार, शिक्षा से वंचित रखना, और पर्दा प्रथा जैसी अनेक कुप्रथाएं समाज में व्याप्त थीं। ब्रिटिश शासन के आगमन के साथ पश्चिमी शिक्षा और विचारधारा का प्रवेश हुआ। इससे भारतीय बुद्धिजीवियों में सामाजिक चेतना जागृत हुई। अनेक प्रगतिशील विचारकों ने महसूस किया कि समाज की प्रगति के लिए महिलाओं की स्थिति में सुधार आवश्यक है। अनेक समाज सुधारकों ने महिलाओं की दयनीय स्थिति को सुधारने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किए। राजा राममोहन राय (1772-1833) को आधुनिक भारत का जनक माना जाता है। उनका मानना था कि भारतीय समाज की प्रगति के लिए धार्मिक और सामाजिक सुधार अनिवार्य हैं। उन्होंने वेदांत दर्शन को अपना आधार बनाया और एकेश्वरवाद का प्रचार किया। 1828 में उन्होंने ब्रह्म समाज की स्थापना की, जो भारत का पहला सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन था। राममोहन राय का सबसे महत्वपूर्ण योगदान सती प्रथा के उन्मूलन में था। उन्होंने 1818 से 1829 तक निरंतर प्रयास किए। अंततः लॉर्ड विलियम बेंटिक के गवर्नर जनरल काल में 1829 में सती प्रथा निषेध अधिनियम पारित हुआ। यह भारतीय महिलाओं के लिए एक ऐतिहासिक विजय थी। ईश्वरचंद्र विद्यासागर (1820-1891) 19वीं सदी के महानतम



समाज सुधारकों में से एक थे। विद्यासागर ने हिंदू शास्त्रों का गहन अध्ययन कर यह सिद्ध किया कि विधवा पुनर्विवाह शास्त्रसम्मत है। उन्होंने 1855 में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'विधवा विवाह प्रचलित होना चाहिए' प्रकाशित की। इस पुस्तक में उन्होंने तर्क, शास्त्र और मानवता के आधार पर विधवा पुनर्विवाह की वकालत की। उनके अथक प्रयासों से 1856 में विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित हुआ। यह कानून विधवाओं को पुनर्विवाह का कानूनी अधिकार प्रदान करता था। विद्यासागर ने स्वयं अनेक विधवा विवाहों का आयोजन किया और आर्थिक सहायता प्रदान की। स्वामी दयानंद सरस्वती (1824-1883) ने 1875 में आर्य समाज की स्थापना की। दयानंद ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' में सामाजिक कुरीतियों की कड़ी आलोचना की और सुधारों का आह्वान किया। आर्य समाज ने देश भर में अनेक कन्या पाठशालाओं और गुरुकुलों की स्थापना की। इन संस्थाओं में लड़कियों को संस्कृत, वेद, और आधुनिक विषयों की शिक्षा दी जाती थी। जालंधर, कांगड़ी और अन्य स्थानों पर महिला शिक्षा संस्थाएं स्थापित की गईं। महात्मा ज्योतिबा फुले (1827-1890) भारत के महानतम समाज सुधारकों में से एक थे। फुले की विचारधारा मूलतः समतावादी और क्रांतिकारी थी। उन्होंने ब्राह्मणवादी व्यवस्था की कड़ी आलोचना की और शूद्रों, अतिशूद्रों और महिलाओं के अधिकारों की मांग की। ज्योतिबा फुले और उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले ने 1848 में भारत का पहला बालिका विद्यालय पुणे में खोला। यह भारतीय इतिहास में एक ऐतिहासिक घटना थी। 1873 में फुले ने सत्यशोधक समाज की स्थापना की। इस संगठन का उद्देश्य सामाजिक समानता और न्याय की स्थापना करना था। समाज ने जाति भेदभाव के विरुद्ध संघर्ष किया और निम्न वर्ग के उत्थान के लिए कार्य किया। राजा राममोहन राय से लेकर ज्योतिबा फुले तक, विभिन्न सुधारकों ने महिला शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, सती प्रथा उन्मूलन, और बाल विवाह निषेध जैसे मुद्दों पर कार्य किया। प्रस्तुत शोध पत्र महिला आंदोलनों के ऐतिहासिक विकास क्रम एवं उनके वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक तथा कानूनी प्रभावों का व्यापक विश्लेषण करता है। यह शोध 19वीं सदी के सामाजिक सुधार आंदोलनों से लेकर 21वीं सदी के '#MeToo' एवं डिजिटल नारीवाद तक की यात्रा को रेखांकित करता है। भारतीय महिला आंदोलनों ने संविधान निर्माण, श्रम कानूनों, घरेलू हिंसा अधिनियम तथा शिक्षा नीतियों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है। वर्तमान में डिजिटल माध्यमों के उदय ने महिला आंदोलनों को एक नई गति एवं वैश्विक पहुँच प्रदान की है। यह